

---

Rishi Agastyaproktam Shivapujasadhanani 3 Shivarchane  
Dravyadyarpanopadesham

---

ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवपूजासाधनानि ३ शिवार्चने  
द्रव्याद्यर्पणोपदेशम्

---

Document Information

---



---

Text title : Rishi Agastyaproktam Shivapujasadhanani 3 Shivarchane Dravyadyarpanopadesham

File name : shivapUjAsAdhanAni3shivArchanedravYAdyarpaNopadesham.itx

Category : shiva, shivarahasya, pUjA, upadesha, advice

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 26

kumbhaghoNamahimAnuvarNanam | 167.2-177||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 16, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

Rishi Agastyaproktam Shivapujasadhanani 3 Shivarchane  
Dravyadyarpanopadesham

---

ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवपूजासाधनानि ३ शिवार्चने  
द्रव्याद्यर्पणोपदेशम्

---



(शिवरुद्रस्थान्तर्गते उग्राख्ये)

सुगन्धाभ्ररसेनेशं सार्द्राष्टम्यां प्रयत्नतः ॥ १६७.२ ॥

योऽभिषिञ्चति रुद्रेण स मोक्षमधिगच्छति ।

क्षीरेण प्रतिभूतायां प्रस्थेनेशं प्रयत्नतः ॥ १६८ ॥

योऽभिषिञ्चति रुद्रेण स मोक्षमधिगच्छति ।

नवत्रयप्रीतिकरैर्नवभिर्धान्यकैः शिवम् ॥ १६९ ॥

योऽभिषिञ्चति रुद्रेण स मोक्षमधिगच्छति ।

भस्मनाप्यतिशुद्धेन श्रौतेन गिरिजेश्वरम् ॥ १७० ॥

योऽभिषिञ्चति रुद्रेण स मोक्षमधिगच्छति ।

धूपयिष्यति यो धूपैरुत्तमैः शिवसन्निधौ ॥ १७१ ॥

स सर्वपापनिर्मुक्तः शिवलोकं प्रयास्यति ।

दीपमालां गोघृतेन यः करोति शिवालये ॥ १७२ ॥

स सर्वपापनिर्मुक्तः शिवलोकं प्रयास्यति ।

सापूपं स्वाद्गुञ्जित्रात्रं यः शिवाय निवेदयेत् ॥ १७३ ॥

स सर्वपापनिर्मुक्तः शिवलोकं प्रयास्यति ।

भेरीमद्दलवाद्यैश्च घोषयेद्यः शिवालये ॥ १७४ ॥

स सर्वपापनिर्मुक्तः शिवलोकं प्रयास्यति ।

वीणादिध्वनिभिर्वस्तु ध्वनयेच्छिवमन्दिरे ॥ १७५ ॥

स सर्वपापनिर्मुक्तः शिवलोकं प्रयास्यति ।

माघमासि मडेशाय यः कुर्याद्धृतकम्बलम् ॥ १७६ ॥

स सर्वपापनिर्मुक्तः शिवलोकं प्रयास्यति ॥ १७७ ॥

॥ एति शिवरुद्रस्यान्तर्गते ऋषि अगस्त्यप्रोक्तं शिवपूजासाधनानि 3 - शिवार्चने द्रव्यार्घ्योपदेशं सम्पूर्णां  
॥

- ॥ श्रीशिवरुद्रस्यम् । उग्राप्यः सप्तमांशः । अध्यायः २६ कुम्भघोषामडिमानुवर्णनम् । १६७.२-१७७ ॥

- ..shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 26 kumbhaghoNamahimAnuvarNa  
. 167.2-177..

Notes:

Rṣi Agastya ऋषि अगस्त्य delivers Upadeśa उपदेश (to Dvija द्विज) about the merits of various Dravyārpaṇa द्रव्यार्घ्यं during worship of Śiva शिव, including that of the Ghṛtakambalam घृतकम्बलम् procedure that is specified for Māgha māsa माघ मास and finds detailed mention in the Kāmika Āgama कामिक आगम.

The Adhyāyaḥ 26 अध्यायः २६ has several other details about Śivapūjāsādhānāni शिवपूजासाधनानि.

Proofread by Ruma Dewan

---

—  
*Rishi Agastyaproktam Shivapujasadhanani 3 Shivarchane Dravyadyarpanopadesham*

pdf was typeset on June 16, 2024

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

